

4, 9, 57, 18. KATHAS. 2, 29. BHĀG. P. 3, 9, 22. MĀRK. P. 16, 18. प्रणताशेष-  
सामन्तं vor dem sich alle Nachbarn beugen AK. 2, 8, 2. MĀLAV. 1. तृणानि  
— नोचैः प्रणतानि PĀNĀT. I, 138. प्रणतकाय SADDH. P. 4, 3, b. mit dem  
gen.: प्रणतश्च यथा मूर्ध्ना तव MBH. 4, 202. mit dem acc. R. 1, 32, 1. BHĀG.  
P. 5, 18, 39. Vgl. प्रणति, प्रणाम. — caus. 1) Jmd (acc.) sich verbeugen  
heissen vor (dat.): तामर्चिताभ्यः कुलदेवताभ्यः कुलप्रतिष्ठां प्रणमय्य  
माता KUMĀRAS. 7, 27. beugen: प्रणमितशिरस् MĀLAV. 47. — 2) ehrfurchts-  
voll geben: प्रतिवचनमुच्चैः प्रणमितम् (Schol. = दत्तम्) AMAR. 82.

— अभिप्र sich verbeugen, sich verbeugen vor (dat. acc.) MBH. 3, 15306.  
शिरसा R. 1, 18, 5 (auch GORR.). 2, 58, 12, 92, 4, 3, 51, 14. रामायामभिप्रण-  
म्य R. SCHL. 2, 91, 38 (GORR. 100, 37). शिरसाभिप्रणम्य तम् 1, 39, 15. R.  
GORR. 1, 79, 25. BHĀG. P. 3, 33, 1. अभिप्रणत gebeugt, sich verbeugend  
R. GORR. 1, 70, 5.

— संप्र sich verbeugen vor (acc.): पाडके संप्रणम्य R. 2, 112, 23.

— प्रति sich zuneigen: कुमारश्चित्पितरं वदमानं प्रति नानाम रुद्राय-  
पत्नम् RV. 2, 33, 12.

— वि sich neigen, sich bücken: कृत्स्वमासाय संचारं नातो विनमते क्वचित्  
MBH. 3, 2929. विनम्य पूर्वमिहो ऽपि कृत्ति कृत्स्तिनमोऽज्ञा DRSHTĀNTAC. 7  
in HAB. Anth. S. 217. विनमति चास्य तत्रैव: प्रचये KIR. 6, 34. तदैव प्रच्य-  
यते ऽस्य शत्रो विनमति च MBH. 5, 4564. विनम्य sich verneigend HA-  
RIV. 15031. स्तनभरविनममध्यभागास्तरुण्यः sich biegend BHART. 1, 66.  
— partic. विनत geneigt, gesenkt; = प्रणत H. a. n. 3, 300. MED. t. 157.  
fg. °काय SADDH. P. 4, 3, b. विनतान Brāhman. 1, 13. प्रकामविनतावसौ  
ÇĀK. 58. स्तत्रकविनतो बालमन्दारवृत्तः MEGH. 73, v. l. वृत्तस्यैका शाखा  
यदि विनता — स्यात् VARĀH. BRH. S. 53, 55. (लिङ्गे) विनते — अद्यः 67,  
7. gesenkt, eingedrückt, vertieft: अक्षर्विनत und बाह्यविनत (हार) 52,  
81. त्रिविनत R. 5, 32, 12. gebogen, gekrümmt; = भुग H. a. n. MED. °पृ-  
ष्ठः (गावः) VARĀH. BRH. S. 60, 3. मध्यविनतभुवो ये 67, 69. प्रकामविनते  
भुवौ ad ÇĀK. 69, 2. चाप R. 3, 50, 2. (प्रतिमा) वामाव्यवता पत्नी दक्षिणाविनता  
हिनस्त्यायुः gebogen, geneigt VARĀH. BRH. S. 58, 51. gebückt so v. a. ge-  
demüthigt, demüthig; = क्षितित MED. SOM. NAL. 180. BHATT. 7, 52. तरु-  
वर विनतास्मि ते सदाहम् GHAT. 18. in der Gramm. = नत in einen  
cerebralen Laut umgewandelt P. 8, 3, 61, Sch. विनता पिठका Bez. eines  
bei der Krankheit प्रमेहं erscheinenden Ausschlags (der viell. vertieft  
ist) SUÇA. 1, 273, 12, 18. H. a. n. MED. — विनत BHART. 2, 59 falsche Les-  
art für वितत; vgl. गोविनत, wofür auch गोवितत gelesen wird. —  
Vgl. विनति, विनाम. — caus. herabbeugen, biegen: विनाम्य शाखाम्  
MBH. 3, 15583. पृष्ठं वि° HARIV. 11636. क्षितौ — अङ्गं विनमय्य दाडवत्  
BHĀG. P. 4, 9, 3. गात्राणि विनामयति ÇĀK. zu BRH. ĀR. UP. S. 23. स्त-  
नभारविनामित (मध्य) MBH. 4, 394. विनामयतु कार्मुकम् so v. a. spannen  
MBH. 1, 5436. 8, 3520. hinbiegen: तद्वक्त्राभिमुखं मुखं विनमितम् AMAR. 81.

— सम् 1) sich beugen, sich verbeugen vor: उपजिघ्रेद्धि मां मूर्ध्नि तातः  
संनम्य सत्वरम् R. 2, 72, 30. धीरः संनमते बलीयसे MBH. 5, 1130. अस्मै श-  
त्रवः संनमते 3, 1374. संनमतमरीणाम् sich demüthig unterwerfend RAGH.  
18, 33. यस्यास्तव ब्रह्म (sic) च ब्राह्मणाश्च — उपस्थाने संनमति MBH. 1,  
3230. ते ऽपि त्वां संनमन्तो 4, 267. Verz. d. Oxf. H. 148, b, 26. partic.  
संनत gebeugt, gebogen, gekrümmt: संनताः फलभरिण पुष्पभरिण च दुमाः  
R. 3, 16, 5. त्वं पद्मं खं वातेन संनतः R. GORR. 2, 8, 40. संनताङ्गो KUMĀRAS. 1, 34.

संनतवामजङ्घ BHATT. 2, 31. संनतभू MBH. 2, 2164. सन्ना शेकेन संनता vor  
Kummer gebeugt R. 2, 65, 17. संनतः प्रश्रितो भूत्वा sich verneigend INDR.  
1, 10. अपि ते संनताः सर्वे सामन्ता रिपवो जिताः sich demüthig verbeu-  
gend R. 1, 20, 12. mit pass. Bed. wovor man sich verbeugt: दासवत्संनता-  
र्याङ्गिः BHĀG. P. 7, 4, 32. eingedrückt, gesenkt, vertieft, verengert: (वेदिः)  
मध्ये संनततरा Schol. zu KĀTJ. ÇR. 688, 17. भल्लैः संनतपर्वभिः MBH. 14,  
2271. (वाणाः) संनताः (wohl = संनतपर्वणाः) पञ्चपर्वणाः R. 3, 43, 20.  
पर्वसु संनता VIKR. 112. — 2) sich richten nach, willfahren, gehorchen:  
med.: यूने समस्मै क्षित्यौ नमत्ताम् RV. 5, 36, 6, 7, 31, 9. समस्य मन्यवे वि-  
शो विश्वो नमत् कृष्टयः। समुद्रायैव सिन्धवः 8, 6, 4. VS. 8, 46. TS. 3, 4, 4,  
1. समुद्रायोपसौ नमत् दधिक्रावेव शुचये पदार्थं RV. 7, 41, 6. अग्निश्च पृ-  
थिवी च संनते sich nach einander richtend, in Einklang stehend VS.  
26, 1. — 3) zu Stande kommen: सत्या ऽषामाशिषः सं नमत्ताम् VS. 35,  
20. — 4) gerade biegen —, richten; daher in die rechte Ordnung brin-  
gen, zurecht machen; zuwegebringen; act. med.: इयूः संनममानः RV. 10,  
87, 4. इषीकाम् AV. 7, 56, 4. सं वो मनसि सं व्रता समार्कतोर्नमामसि 3, 8,  
5. आकृते समिदे नमः 6, 131, 2. इम एन्द्रा अक्षितिरा आकृतिं सं नमन्तु मे 5,  
8, 2. कामान् ÇAT. Br. 2, 3, 4, 16. ते मे सं नमताम्दः VS. 26, 1. richten nach:  
यूपं प्राचो संनमति SHADY. Br. 4, 4. — caus. 1) beugen, sinken machen:  
शूलम् — पाणिना समनामयत् MBH. 12, 10675. संनमितोभयां KUMĀRAS. 3,  
45. भारिण गो संनामयन्पदे पदे BHĀG. P. 8, 18, 20. — 2) abändern: पत्नी  
मन्त्रं संनमयति zurichten für einen bestimmten Zweck KAUC. 60. 63. ĀCY.  
GRHJ. 3, 8. — 3) zurechtbringen, zuwegebringen: अग्नी ये विव्रता स्थन्  
तान्वः सं नमयामसि AV. 3, 8, 5. तामस्मै यज्ञ आशिषं संनमयति ÇAT. Br.  
1, 9, 2.

— अभिसम् abändern: सर्वेषु देवताशब्देऽग्निमेवाभिसेनमेत् ĀCY. ÇR. 9,  
7. प्राकृतीर्वाभिसेनमेत् ÇĀK. ÇR. 1, 17, 19.

— उपसम् Jmd zuwenden: तदस्मै देवा उपसंनमन्तु AV. 19, 41, 1.

नैमउक्ति (नमस् + उक्ति) f. Huldigung: भूपिष्टा ते नमउक्तिं विधेम  
RV. 1, 189, 1 (BRH. ĀR. UP. 5, 15. ĪÇOP. 18). 3, 14, 2. प्र तव्यसौ नमउक्तिं तु-  
रस्याहं पूष्ट उत वयोरेदिति 5, 43, 9. 8, 4, 6.

1. नमते (von नम्) UNĀDIS. 3, 110. gebeugt, gebogen UGÉVAL. Nach UNĀDIS.  
im ÇKDR. m. Herr, Gebieter (प्रभु; viell. eine Verwechslung mit प्रह्ल);  
Schauspieler; Rauch (Wolke Wils).

2. नमत n. Filz VJUTP. 208. Vgl. pers. afgh. نعل, नामतिक und 2. नवत.  
नमन (wie eben) n. das sich-Senken: कर्णायोनमोऽज्ञतो MĀRK. P. 43,  
25. — Vgl. गृह्.

नमनीय (wie eben) adj. vor dem oder wovor man sich zu verbeugen  
hat: °पाद BHĀG. P. 3, 21, 21.

नमयिषु (vom caus. von नम्) adj. beugend: स्थिरा चित्रमयिष्वः RV.  
8, 20, 1.

नैमस् (von नम्) n. VS. Prāt. 2, 39. 1) Verbeugung; Ehrenbezeugung  
(in Geberde oder Wort), Verehrung: उत्तानहस्ता नमसोपसर्ग्य RV. 3, 14,  
5. उपं बुबाधो नमसा सदेम 6, 1, 6. 16, 46. 10, 79, 2. नम् इन्द्राय वोचत 2,  
21, 2. नमस्ते ब्रवाम 28, 8. उपं बुवे नमसा दैव्यं जनेम् 30, 11. 1, 51, 15. न-  
मस्ते अद्य ओजसे गुणति देव कृष्टयः 10, 64, 10. प्र वो मेहे महे नमो भर-  
धम् 1, 62, 2. अयं ते हेके वरुण नमोभिरव यज्ञेभिरमेहे कृविभिः 24, 14.  
नम् इन्द्राय नम् आ विवासे नमो दाधार पृथिवीमुत ध्याम्। नमो देवेभ्यो नमं